International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly
ISSN – 2347-7075
Impact Factor –7.328
Vol.9 Issue.3 Jan–Feb - 2022

"मुंशी प्रेमचन्द के उपन्यास 'निर्मला' : वास्तविकता का बोध"

डॉ. भीमसिंग के. राठोड
हिन्दी अध्यापक स.प्रौ.शा., के.एस.आर.पी. कलबुरगि (कर्नाटक)

प्रस्तावनाः-

हिन्दी के उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद जी द्वारा लिखित उपन्यास निर्मला एक चरित्रप्रधान उपन्यास है, जो भारतीय नारी जीवन की एक दुःख, दर्दपूर्ण करूणाजनक कहानी है। यह उपन्यास दहेज और अनमेल विवाह की सामाजिक समस्या पर आधारित है। भले ही कहानी बहुत वर्षो पुरानी होगी लेकिन आज भी यह कहानी हर कही घटती हुई दिखाई पडती है। जैसे- उपन्यास की कथा अत्यंत सहज स्वाभाविक ढंग से आरंभ होती है। बाबू उदयभानु लाल बनारस के अमीर और प्रतिभावान् प्रतिष्ठित वकील थे। वे धनसंचय करना चाहते थे परन्तु परिवार के असहायक प्राणियों को आश्रय देने को अपना परम कर्तव्य समझते थे। वही से कहानी शुरू होती है और दर्दनाक अंत होता है।

निर्मला का कथानक भारतीय समाज में दहेज प्रथा का कारण उत्पन्न उन दारूण परिस्थितियों का चित्र प्रस्तुत करता है जिनमें हँसती खेलती, सुशील एवं सर्वगुण सम्पन्न कन्याओं का जीवन नरक बन जाता है। यह स्थिति सबसे भीषण रूप में मध्यमवर्ग के कुलीन परिवारों से समक्ष उपस्थित होती है, जहाँ यह केवल कन्या के जीवन की नहीं अपितु सम्पूर्ण परिवार के जीवन की भयानक त्रासदी का रूप ग्रहण कर लेती है। दहेज की समस्या के कारण केवल निर्मला का जीवन ही नहीं उजड़ता अपितु बाबू उदयभान लाल का पूरा परिवार ही उजड़ जाता है। प्रस्तुत उपन्यास इस लीला का करुण चित्र उपस्थित करता है ।

उपन्यास के प्रारम्भ में निर्मला के पिता बाबू उदयभान लाल की पारिवारिक पृष्ठभूमि का चित्रण किया गया है। एक सफल वकील होने के कारण बाबू उदयभान के पास पैसे की कमी नहीं कहीं जा सकती, किन्तु अपने उदार स्वभाव के कारण उन्होंने कई भांजो, भतीजों, ममेरे तथा फुफेरे भाइयों को भी अपने यहाँ आश्रय दे रखा है। बड़े परिवार का भरण पोषण करते हुए बहुत अधिक धन का संचय उनके लिए सम्भव नहीं हो पाता है। सच बात तो यह है कि अभी तक उन्हें धन संचय की विशेष आवश्यकता ही समझ में नहीं आयी थी। निर्मला और कृष्णा दो कन्याएं तथा चन्द्रभान और सूर्यभान दो पुत्रों सहित कुल छः प्राणियों के परिवार के लिए कोई आर्थिक संकट की स्थिति उत्पन्न हो सकती है ऐसा वह कभी नहीं सोचते थे, किन्तु अपनी बड़ी बेटी निर्मला के विवाह के सन्दर्भ में आर्थिक संकट के कारण परिवारिक विग्रह का दृश्य सामने आ जाता है। वर पक्ष से यद्यपि लम्बे चौड़े दहेज की मांग नहीं की गयी है फिर भी यह शर्त रखी गयी है कि विवाह की रस्म सम्मानजनक पूंजी के साथ ही बाबू उदयभान लाल आसानी से कर्ज के रूप में लोगों से रूपये प्राप्त कर सकते है। इसलिए उत्साहपूर्वक अपनी पहली बेटी के विवाह की तैयारियों से लगे हुए है और चाहते है कि विवाह सम्बन्धी समस्त कार्य इतने उत्कृष्ट रूप में सम्पन्न हो कि सभी बहुत दिनों तक उनका स्मरण करते रहे।

बाबू उदयभान लाल की पत्नी कल्याणी व्यावहारिक बुध्दि से काम लेनेवाली महिला है। और निर्मला के विवाह पर बहुत अधिक खर्च करना अथवा उसके लिए अधिक कर्ज का बोझ लाद लेना उन्हें उचित नहीं लगता । कल्याणी का यह पक्ष यह है कि दूसरी बेटी कृष्णा की शादी, उससे भी अधिक दो-दो बेटियों की पढ़ाई-लिखाई का भार सामने है। शादी के लिए पाँच हजार से अधिक खर्च करना बुध्दिमानी नहीं है। इस बात पर पति और पत्नी में मतभेद उत्पन्न होता है जो पारिवारिक कलह का रूप ले लेता है, जिसका परिणाम यह होता है कि कल्याणी अपने कपड़े लेकर मायके जाने का निश्चय करती है। जो पत्नी की उचित बात न सुनने के लिए तैयार हो और सदैव मनमानी करता हो ऐसे पति के साथ कैसे रहा जा सकता है।

कल्याणी घर छोड़कर नहीं जा पाती, क्योंकि बच्चों की ममता उसके पैर बाँध देती है, किन्तु बाबू उदयभान अपनी पत्नी को सबक सिखाने के लिए एक नाटकीय निश्चय करते है और रात के समय चुपचाप घर से निकल पड़ते है। इनकी योजना यह है कि गलियों के रास्ते से ये गंगाघाट पर पहुँच जायेंगे और वहाँ अपने कपड़े रखकर ये नाव के द्वारा मिर्जापुर चले जायेंगे। चार-पाँच दिन बाद सुविधानुसार लौटेंगे, किन्तु इस बीच कल्याणी तथा दूसरे लोग यह अनुमान करके अतिशय चिन्तित रहेंगे कि पारिवारिक असन्तोष के कारण उन्होंने आत्महत्या कर ली है। गंगा के किनारे उनके वस्त्र आदि का मिलना, उनका अनुपस्थित रहना निश्चय ही आत्महत्या के अनुमान को पुष्टि करेगा।

मुंशी जी की अन्त्योष्टि से सम्बन्धित पृष्ठ से मुक्त कल्याणी निर्मला के विवाह के लिए चिन्तित होती है और चाहती है कि उसी तिथि को विवाह सम्पन्न हो जाए। वह तत्काल अपने पुरोहित मोटे राम को बाबू भालचन्द्र सिन्हा के पास इस संदेश से खत भेजती है कि विवाह के कार्यक्रम मुंशी जी के इच्छा के अनुसार पूर्ववत् सम्पन्न हो जाय, एक दिवंगत आत्मा के प्रति न्याय तथा एक टूटे हुए विपत्तिग्रस्त परिवार पर सिन्हा जी का बड़ा एहसान होगा । भालचन्द्र सिन्हा (वर के पिता) सहानुभूति और मानवता की बातें तो बहुत करते है, परन्तु विवाह के लिए किसी प्रकार से तैयार नहीं होते है, क्योंकि वे जानते है कि कन्या के पिता के मृत्यु के पश्चात् कुछ मिलने की आशा नहीं है। उनकी पत्नी रंगीली मानवीय आधार पर विवाह के पक्ष में है, किन्तु वर भुवनमोहन सिन्हा स्वयं दहेज बिना शादी के लिए तैयार नहीं है। पंडित मोटेराम खाली हाथ वापस लौटते है, कल्याणी अत्यन्त

दुःखी और निराश होती है। उनकी ओर से पंडित मोटे राम नये सिरे से प्रयत्न प्रारम्भ करते है । कल्याणी की वित्तीय सीमा के भीतर ही मुंशी तोते राम से सम्बन्ध हो पाता है। मुंशी तोताराम पेशे से वकील है और चालीस वर्ष की अधेड़ अवस्था में उनकी पत्नी उन्हें अकेला छोड़कर परलोक सिधार चुकी है। उनके तीन पुत्र मनसाराम, जिया राम और सिया राम क्रमशः १८, ११ और ७ वर्ष के है और परिवार संभालने के लिए उनकी विधवा बहन रूक्मणी उनके यहाँ रहती है, किन्तु इस अवस्था में नई-नवेली पत्नी मिल सकती है। वे एकाकीपन की वंचना क्यों सहे? परिणामतः सोलह वर्षीय निर्मला का विवाह चालीस वर्षीय मुंशी तोता राम वकील के साथ धूम-धाम से सम्पन्न होता है और वैवाहिक जीवन के अनगिनत सलोने सपनों की चिंता सजाते हुए निर्मला पतिगृह में प्रवेश करती है। जहाँ पर उन्हें तोता राम की पत्नी होने के साथ ही अपने समवयस्क मनसाराम तथा दो अन्य बच्चों जिया राम तथा सिया राम की सौतेली माता होने का उत्तरदायित्व भी सामने आता हैं ।

'निर्मला' एक समस्या प्रधान उपन्यास है। इसकी प्रमुख समस्या स्पष्टतः दहेज, मेल विवाह से संबंधित है। जिसके कारण निर्मला के जीवन की त्रासदी होती है। पहले से निर्धारित वैवाहिक सम्बन्ध टूटने के पीछे प्रमुख कारण यही है कि पिता की मृत्यु के बाद समुचित दहेज मिलने की आशा नहीं रह गयी। आर्थिक विवशता के कारण ही दूसरे लड़कों को छोड़कर दुगुनी अवस्था के एक ऐसे अधेड़ व्यक्ति के साथ निर्मला की शादी निश्चित की जाती है, जिसकी एक पत्नी तीन-तीन बच्चों को छोड़कर दिवंगत हो चुकी है। इस प्रकार प्रत्यक्षतः इस उपन्यास की मूल समस्या दहेज दिखलाई पड़ती है, किन्तु वास्तव में इसके माध्यम से प्रेमचन्द जी व्यापक रूप में परम्परागत विवाह की प्रासंगिकता पर ही प्रश्नचिन्ह लगा देते है। भारतीय समाज विशेषतः मध्यमवर्गीय समाज के जीवन में प्रचलित परम्परागत विवाह कितना सार्थक एवं सफल रहा है, इस प्रश्न को केन्द्र में रखते हुए प्रस्तुत उपन्यास विवाह से सम्बन्धित अनेकानेक समस्याओं का यथार्थ चित्र उपस्थित करता है ।

भाग्य पर विश्वास रखनेवाली निर्मला इस विडम्बनापूर्ण जिन्दगी के साथ समझौता करने का पूरा प्रयास करती है। यह स्वयं को कर्तव्य की बल बेदी पर न्यौछावर कर देती है। एक ओर पति परमेश्वर की सेवा में वह कोई कसर नहीं रखती है और दूसरी ओर बच्चों की सेवा के लिए भी तत्पर रहती है। इतना होने पर नियति उसके साथ खिलवाड़ करती है और घर पर कोई प्राणी उससे प्रसन्न तथा संतुष्ट नही दिखाई पड़ता है । वह सर्वथा निरपराध होने पर भी सबके अन्दर असंतोष रख कोप का भाजन बनती है। मुंशी तोता राम अधेड़ अवस्था में विवाह करते है तो दाम्पत्य जीवन का नये सिरे से अध्ययन करके निर्मला को सुखी और खुश करने का प्रयास करते है। गहने, कपड़े तथा सुख साधनों का ढेर निर्मला के कदमों में उपस्थित करके भी खुशी नहीं कर पाये, क्योंकि दोनों के बीच अवस्था का जो अन्तर है उसे इन साधनों के द्वारा पाया नहीं जा सकता। अपनी शारीरिक दुर्बलता और असमर्थता को छिपाने का प्रयास करते हुए मुंशी जी निर्मला को अकारण संदेह की दृष्टि से देखने लगते है और इस स्थिति की चरम सीमा तब दिखलाई पड़ी जब अपने ही बड़े बेटे मानसाराम का निर्मला के साथ उठना बैठना या बातचीत करना उन्हें फूटी आँख नहीं सुहाता और ये मनसा राम को अध्ययन के लिए विवश करते है। इसमें सन्देह नहीं है कि मानसा राम के साथ हँस बोल कर अथवा कुछ समय तक उससे अंग्रेजी पढ़ने में निर्मला का समय भली-भाँति कट जाता है, किन्तु घर से हटाए जाने पर उसके ऊपर ही यह आरोप लगाया जाता है। मनसा राम के दिमाग में यह भर जाता है कि निर्मला के निर्देश पर ऐसा किया गया है। मुंशी जी स्वयं अपनी पत्नी की ओर से उसका मन फिराने के लिए इस प्रकार का जहर घोटते है। रूक्मीणी तो ननद की परम्परागत भूमिका में नित्य ऐसा करती है। सौतेली माता के बारे में जो प्रसिध्दि है उसके अनुसार मनसा राम इस प्रकार की बातों से प्रभावित एवं मर्माहत होता है । निराशा एवं दुर्भाग्य की अनुभूतियों के बीच मनसा राम का स्वास्थ्य दिन घर दिन खराब होने लगता है और इसका परिणाम यह होता है. कि मनसा राम की मृत्यु हो जाती है। मनसा राम की मृत्यु का उत्तरदायित्व काफी समय तक निर्मला पर थोपा जाता है, किन्तु सांत्वना की बात यह है कि मृत्यु के पहले मनसा राम इस बात का प्रमाण अपने व्यवहार द्वारा उपस्थित करता है। जिससे स्पष्ट है कि वास्तविकता से परिचित है और निर्मला को निर्दोष मानता है । निर्मला जिया राम और सियाराम इन दोनों बच्चों को खुश रख सके इसका कोई साधन उसके पास नहीं था, क्योंकि लाख प्रयत्न करके यह सौतेली माँ के पद से मुक्त नहीं हो सकती। रूक्मीणी के भड़काने से बच्चे और भी असंतुष्ट हो गये थे । जिया राम कुछ सोचने समझने लायक हो गया था और वह बात-बात पर निर्मला और कभी मुंशी जी से भी जवान लड़ाने लगता था। निर्मला से बदला लेने के लिए एक अवसर पाकर निर्मला के गहने की पेटी गायब कर देता है और जानते हुए भी निर्मला कुछ बोल नहीं पाती। पुलिस कार्यवाही होने पर वह जिया राम को बचाने के लिए घूस के रूप में रूपयों का प्रबन्ध करती है। इसके बावजूद वह उसे अपना नहीं बना पाती, यही स्थिति भी नन्हें सिया राम की भी है तो तमाम प्रकार के असंतोष को मन में लिए हुए किसी साधु के बहकावे में घर छोड़कर भाग जाता है ।

मुंशी तोता राम जी के विपत्तियों का कोई अन्त नहीं था। जवान पत्नी के प्रति संदेह और अविश्वास के कारण उनके आचरण और व्यवहार में जो विकार उत्पन्न हो गये थे उन्हीं के कारण निर्मला का जीवन नरक बना और तीनों बच्चे एक एक करके हाथ से निकल गये । इसके लिए कभी स्वयं को दोषी नहीं मानना, पश्चाताप करके कभी निर्मला को दोषी ठहराते तो कभी भाग्य का रोना रोते। मुंशी जी लगातार अस्वस्थ रहने लगे जिसके कारण उनकी आमदनी लगभग बन्द हो गयी और दूसरी ओर उनके मकान और सम्पत्ति के संबंधित नये नये मामले उठने लगे। इन परिस्थितियों से साहस एवं धैर्य खो बैठे और किसी को बताए बिना घर छोड़कर चले गये ।

विपत्तियों की करुण कथा के बीच एक आकस्मिक घटना घटित होती है। निर्मला की छोटी बहन कृष्णा का विवाह एक अच्छे घर में बिना दहेज के हो जाता है। कृष्णा का जीवन नरक होने से बच जाता है। मनसा राम के चिकित्सा के समय से ही डॉ.

सिन्हा और उनकी पत्नी सुधा मुंशी तोता राम निर्मला के साथ पारिवारिक सम्बन्ध सूत्र में बंध जाते है। सुधा के मन में निर्मला के प्रति सच्ची सहानुभूति थी और उसने क्रमशः निर्मला के मुख से उसकी सारी राम कहानी सुन ली थी। उसे यह मालूम हो गया कि निर्मला का विवाह उसके पिता ने डॉ. सिन्हा के साथ तय किया था। जो डॉ. सिन्हा और उसके पिता की दहेज इच्छा के कारण सम्भव नहीं हो पाया। अपने पति और अपने परिवार के प्रति सुधा का मन क्रोध से भर उठता है और वह डॉ. सिन्हा को निर्मला की कहानी से अवगत करा देती है। डॉ. सिन्हा भी पश्चाताप करने लगते हैं। इसका परिणाम यह है कि डॉ. सिन्हा के छोटे भाई के साथ निर्मला की छोटी बहन कृष्णा का विवाह समाज के लोगों को विस्मय विमुख कर देता है। कृष्णा के विवाह के समय मुंशी जी भी उपस्थित थे। इस समय निर्मला एक बच्ची को जन्म दे चुकी थी। इन दोनों सुखद घटनाओं के बावजूद निर्मला के जीवन में सुख और संतोष का कोई अध्याय प्रारंभ नहीं हो सका, क्योंकि मुंशी जी की अस्वस्थता, मकान की निलामी और उनके घर से पलायन से यह दुखी हो गयी। इसी बीच अपने उपकारी डॉ. सिन्हा की कामलोलुप दृष्टि का भी उसे अनुभव करा दिया । चिन्ता और शोक के बीच अपनी नवजात बच्ची को उसने अपनी ननद रूक्मणी से संरक्षण में यह कहते हुए छोड़ दिया कि, "दीदी जी अब मुझे किसी भी वैद्य की दवा फायदा नहीं करेगी।" आप मेरी चिन्ता छोड़ दीजिए। बच्ची को आपके गोद में छोड़कर जा रही हूँ। अगर यह जीती जागती रही तो किसी अच्छे कुल में विवाह कर दीजिएगा। मैं तो इसके लिए अपने जीवन में कुछ न कर सकी। केवल जनम देने भर की अपराधिनी हूँ । चाहे कुंवारी रखियेगा चाहे विष देकर मार डालिएगा पर कुपात्र के गले न मड़िएगा, इतना ही आपसे विनय है। मैं आप की कुछ सेवा न कर सकी इसका बड़ा दुख हो रहा है। मुझ अभागिन से किसी को सुख नहीं मिला, जिस पर मेरी छाया पड़ गयी उसका सर्वनाश हो गया। अगर स्वामी जी कभी घर आये तो उनसे कहियेगा कि इस कर्मजली के अपराध का क्षमा कर दे।"

इस प्रकार निर्मला की विपत्ति की कथा समाप्त होती है। उपन्यास का अंतिम दृश्य यह है कि निर्मला का शव मकान के बाहर पड़ा है। शव के इर्द-गिर्द मुहल्ले के लोग जमा है, विचार-विमर्श चल रहा है कि निर्मला का दाह संस्कार कौन करेगा। इसी समय एक बूढा पथिक झोला लटकाए सहसा उपस्थित होता है। वह पथिक और कोई नहीं मुंशी तोता राम था. 'निर्मला' में दहेज प्रथा उससे सम्बध्द दूसरी समस्या बाद में आती है। सबसे पहले तो उपन्यास के प्रारम्भ में ही करूण चित्र सामने उपस्थित होता है। जो परम्परागत विवाह को प्रश्नचिन्ह के घेरे में ला देता है। यह चित्र सुख सम्पन्नता से भरे पूरे घर में पिता के जीते जी निर्मला को है। जो विवाह निश्चित हो जाने की तिथि से ही अकेली, असहाय और विवश हो गयी है। उसका चित्रांकन करते हुए उपन्यासकार का कथन उल्लेखनीय है ।

इसी सूचना से अज्ञान बालिका को मुख ढाँप कर एक कोने में बैठा रखा है। उसके हृदय में एक विचित्र शंका समा गयी है, रोम रोम में अज्ञात भय का संचार हो गया, न जाने क्या होगा? उसके मन में उमंगे नहीं है जो युवतियों के आँखो में तिरछी चित्तवन बनकर होतो पर मधुर हास्य बन कर और अंगों में आलस्य बनकर प्रकट होती है। यहाँ अभिलाषाएँ नहीं है, वहाँ केवल शंकाएँ, चिन्ताएँ और कल्पनाएं है। यौवन का अभी तक पूर्ण प्रकाश नही हुआ है। यह चित्र अंकित करते हुए मानव उपन्यासकार प्रश्न पूछता है? "यह भी कोई विवाह हुआ, जहाँ कन्या की राय का कोई स्थान ही नहीं हो और वह भली-भाँति यह भी जानती हो कि विवाह का अर्थ क्या है' ?

उपर्युक्त उदाहरण के तुरन्त बाद निर्मला ओर कृष्णा के वार्तालाप में विडम्बनापूर्ण वैवाहिक रीति को प्रासंगिकता को एक प्रकार से खुली चुनौती दी गयी है। इसे पुरुष भारतीय समाज में नारी के उत्पीड़न एवं शोषण का एक तरीका माना गया है। इस वार्तालाप में कृष्णा का आक्रोश स्पष्ट रूप में उभर कर सामने आया है। निर्मला अथवा कृष्णा की समस्या को उपन्यास की प्रस्तुत समस्या है किन्तु उपन्यास का संकेत यह है कि निर्मला और कृष्णा इस परम्परागत समस्या की प्रतिनिधि मात्र है। बाबू उदयभान लाल और कल्याणी अथवा बाबू भालचन्द्र रंगीली, डॉ. सिन्हा और सुधा ये सभी जोड़े किसी सुविचारित सामन्जस्य के आधार पर नहीं भाग्यवश मिले हुए जोड़े है जिन्हें प्रारब्ध मानकर स्वीकार करना और ढोते रहना मनुष्य की नियत बन गयी है । इसी कारण बाबू उदयभान लाल पारिवारिक कलह से पलायन करने के प्रयास में मारे जाते है तो डॉ. सिन्हा जैसे भला आदमी अपनी सुशील पत्नी के रहते हुए पराई स्त्री की ओर लोलुप दृष्टि रखता हुआ देखा जाता है। भालचन्द्र और रंगीली के स्वभाव में जमीन आसमान का अन्तर दिखाई पड़ता है। वे सब परम्परागत विवाह के विसंगतियों के ज्वलंत उदाहरण के रूप में पाठकों का ध्यान आकृष्ट करते हैं ।

प्रस्तुत उपन्यास की केन्द्रीय समस्या दहेज की महामारी से सम्बन्धित है। जो मध्यवर्गीय जीवन को निरंतर खोखला बनाती जा रही है तथा जिसके कारण निर्मला जैसी अनेकानेक निर्दोष युवतियों का जीवन नरक बन जाता है। इस कुप्रथा के कारण आदमी कितना अमानवीय व्यवहार कर सकता है इसका उदाहरण भालचन्द्र के व्यवहार से स्पष्ट है। विवाह का जो सम्बन्ध पहले से निश्चित हो चुका है, जिनकी तैयारियाँ पूरी हो चुकी थी, वह दहेज के लोभ के कारण ही अस्वीकृत कर दिया जाता है। अन्यथा कल्याणी का लिखित पत्र पढकर पत्थर का कलेजा भी द्रवित हो सकता था। इस अभागिन पर दया कीजिए और डूबती नाव पर लगाइये। स्वामी जी के मन में बड़ी कामनाएं थीं। ईश्वर को कुछ और ही मंजूर था। अब मेरी लाज आपके हाथ में है। कन्या आपकी हो चुकी है। मैं आप लोगों का सेवा सत्कार करना अपना सौभाग्य समझती हूँ। लेकिन यदि इसमें कुछ कमी हो कुछ त्रुटि पड़े तो मेरी दशा का विचार कर क्षमा कीजिएगा। मुझे विश्वास है कि आप स्वयं इस अभागिन की निन्दा नहीं होने देंगे ।

निष्कर्षः- प्रेमचंद ने अपने जीवन के कई अद्‌भुत कृतियाँ लिखी हैं। तब से लेकर आज तक हिन्दी साहित्य में न तो उनके जैसा कोई हुआ है और न कोई और होगा। अपने जीवन के अंतम दिनों के एक वर्ष को छोड़कर उनका पुरा समय वाराणसी और लखनऊ में गुजरा। प्रेमचंद जी साहित्य के हर एक पहलू पर कलम चलाई है। जिसमें उपन्यास निर्मला एक ऐसी कृति है जब से पकड़कर अब तक और आगे भी प्रचलित कहानी है।

संदर्भ:

1. निर्मला: मुंशी प्रेमचंद

2. औपचारिक समीक्षा और समीक्षाएँ: डॉ. आदित्य प्रसाद

3. हिन्दी उपन्यास : डॉ. शिवनारायण श्रीवास्तव

4. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य : सुमित्रा त्यागी

5. हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचंद का योगदान डी.पी. चंद्रवसी

6. हिन्दी साहित्य का इतिहास डॉ. नगेन्द्र